प्रतिदिन

करारा जवाब

पाकिस्तान की तरफ से लगातार हो रही आतंकवादी वारदातों और सीजफायर के उल्लंघनों के बाद भारत की तरफ से पाकिस्तान में स्थित सात चौकियों को नेस्तनाबूद करना बिल्कुल सही कदम है. ऐसा करके भारत ने पाकिस्तानी करतूतों का जवाब भी दे दिया और अपनी मंशा भी जाहिर कर दी. नियंत्रणरेखा (एलओसी) के निकट नौशेरा सेक्टर में पिछले कई दिनों से पाकिस्तान द्वारा आतंकवादी वारदातों को अंजाम दिया जा रहा था. घुसपैठ भी बार-बार की जा रही थी. यहां तक कि कृष्णा घाटी में दो जवानों के सिर भी काट लिये गए. ऐसे में सरकार और सेना दोनों पर यह दबाव था कि वह कुछ ऐसा करे, जिससे लोगों का गुस्सा शांत हो. और सेना ने यही किया. पाकिस्तान को उसी के तर्ज पर जवाब दिया.

सेना प्रमुख ने भी उस वक्त संकेत दे दिया था कि अपनी पसंद के समय और जगह पर बदला लेंगे. वैसे, राजौरी जिले के नौशेरा सेक्टर में एलओसी पर पाकिस्तान की जिन सात चौकियों को गोले बरसाकर बर्बाद किया गया, वह 9-10 मई को अंजाम दिया गया. ऑपरेशन के जिस वीडियो को सेना ने जारी किया, दरअसल वह हफ्ते-दस दिन पहले से सोशल मीडिया पर वायरल हो चुका था. पाकिस्तान को सबक सिखाना इसलिए भी जरूरी था क्योंकि गर्मी बढ़ने और बर्फ पिघलने के दौरान आतंकियों की घुसपैठ तेज हो गई थी. ऐसे में जब पानी सिर ऊपर हो गया तो ना 'पाक' पड़ोसी को सबक सिखाया जाना निहायत जरूरी बन गया. लेकिन इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि भारत की इस कार्रवाई के बाद नियंत्रणरेखा पर तनाव भी बढ़ेगा. पाकिस्तान भारत की इस गोलीबारी की कार्रवाई को भले खारिज करे मगर वह इसका बदला लेने की भी सोच रहा होगा. चुनांचे भारत को चौंकन्ना रहने की आवश्यकता है.

पिछले साल सर्जिकल स्ट्राइक के बाद देश के बिगड़े मिजाज से भी सरकार और विपक्ष को सबक लेने की जरूरत है. हालांकि, इस कार्रवाई पर विपक्ष द्वारा खैरमख्दम करना सुखद अहसास है. इसके बावजूद पाकिस्तान से हिसाब बराबर करने के बारे में भी अब संजीदगी से सोचने की जरूरत है. सरकार का कदम इस मायने में बेहद प्रशंसनीय है कि उसने सेना को एक्शन लेने की खुली छूट दे रखी है. यानी कि पाकिस्तान के लिए संदेश बिल्कुल साफ है सुधर जाओ.

इंटरनेशनल मीडिया

मैनचेस्टर एरिना का सबक

सोमवार की शाम मैनचेस्टर एरिना जश्न में डूबा था, लेकिन रात अचानक स्याह हो गई. खून में सनी

the guardian

हुई. बताने की जरूरत नहीं, यह आतंक का दौर है. वसंत की उस रात इस अंग्रेज शहर में खुशियों से लबरेज हजारों लोगों के बीच एक चेहरा ऐसा भी था, जिसके दिमाग में कुछ और चल रहा था, और उसने सब कुछ तबाह कर दिया. हमें ऐसे हमलों का मकसद समझना होगा. ये ऐसा खौफ पैदा करना चाहते हैं कि लोग खुलकर जीना ही नहीं, अपने बारे में सोचना भी बंद कर दें. युवाओं के ऐसे आयोजन को निशाना बनाना यही दर्शाता है. मैनचेस्टर की धमक द गार्जियन ने बड़ी शिद्दत से महसूस की. लगभग 200 साल पहले इसी शहर में इस अखबार की स्थापना मैनचेस्टर गार्जियन के रूप में हुई थी. वह संसदीय सुधारों की मांग कर रहे प्रदर्शनकारियों के दमन के प्रतीक पीटरलू नरसंहार का दौर था. इतिहास बताता है कि मैनचेस्टर हमेशा न्याय के लिए लड़ा है. चुनौतियों से कभी नहीं घबड़ाया. अपनी खोजी प्रवृत्ति के कारण हमेशा चर्चा में रहा और विश्व की पहली पब्लिक लाइब्रेरी और पहली सार्वजनिक रेल दे सका. मताधिकार और शाकाहार जैसे आंदोलनों के लिए भी यह चर्चित रहा. यह अद्भुत आत्मविश्वास से लबरेज शहर है. जब-जब इसे बांटने की कोशिश हुई, इसके लोग और करीब आए.

सोमवार को भी ऐसा ही दिखा. इसने बताया कि गहरे भय के दौर में भी हार नहीं माननी चाहिए. आतंकी हत्याएं कर सकते हैं, पर वे हमारे देश के अस्तित्व पर खतरा नहीं बन सकते. हां, हमें सतर्कता जरूर बरतनी होगी, क्योंकि खतरे तो हैं. हमें खतरों के बदलते चेहरों के अनुरूप रणनीति भी बदलनी होगी. चेतावनियों को गंभीरता से लेना होगा. कानून का शासन सुनिश्चित करने वाला बेहतर नजरिया पेश करना होगा. नस्ली हिंसा और टीका-टिप्पणी पर रोक लगाकर हाशिये पर डाल दिए गए लोगों का भरोसा जीतना होगा. उकसाने वाली कार्रवाइयों पर नजर रखनी होगी. विपरीत विचारों के प्रति सहिष्णु होना होगा. आतंकी ताकतें समाज को डराकर अपने मकसद साधती हैं, लेकिन यह समझना होगा कि एकजुट समाज को न कोई डरा सकता है और न डिगा सकता है.

द गार्जियन, लंदन.

दर्द न जाने कोय..

जबसे होश संभाला, देश बटवारे से पहले और बाद के बाद हिन्दुओं और खासकर सिंधी समाज पर हुए अत्याचार और बेइंसाफी के किस्से सुन-सुनकर एक खास धर्म व राजनीतिक पार्टी के प्रति दिल में खटास ही रह गई.युवावस्था में कदम रखते हुए सामाजिक क्षेत्र में कुछ कर गुजरने की तमन्ना लिये भारतीय जनता पार्टी में शामिल होकर निःस्वार्थ भाव से पार्टी की सेवा करता रहा. बदलते वक्त के साथ आज भाजपा देश में हर कहीं अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है.

गुजरे कुछ समय से अब महसूस होने लगा है कि भाजपा भी अपने पथ व सिद्धांतों से भटक गई है.पार्टी के नेता भी सत्ता के मद में चूर हो तानाशाही का वर्ताव कर रहे हैं. यहां भी चाटुकारिता के चलते तलवे चाटने और गलत हरकतों पर भी मुंह बंद कर बैठे लोग नजर आने लगे हैं. यूं भी नोटबंदी के बाद से अब तक व्यापार ठप-सा पड़ा हुआ है. अब आशा हो चली थी कि शादी के सीजन में कुछ हालात संभल जाएंगे, और ऐसे में ही बिना कोई सूचना दिये महापालिका द्वारा सैकड़ों दुकानों को सील कर दिया गया. बीते एक सप्ताह से दुकानें बंद पड़ी हुई हैं, और हर तरह के आश्वासनों के बाद भी महापालिका अपने अड़ियल रवैये से बाज नहीं आ रहा है.

स्पष्ट कर दूं कि मैं पार्टी का एक छोटा, पार्टी का हितचिंतक कार्यकर्ता ही हूं. मेरी कोई दुकान नहीं, न ही कोई व्यापार है.आज दर-दर भटकते व्यापारियों को हर कोई समझदारी का घूंट पिलाकर जल्द ही कोई हल निकालने की बातें ही कर रहे हैं.व्यापारी शासन और प्रशासन की मिलीभगत को अच्छी तरह से समझ रहा है. अब शासन करने वालों को भी समझ लेना चाहिये कि जो व्यापारी जिनको सत्ता के ऊंचे आसन पर बिठाता है, वह उन्हें जमीन भी दिखा सकता है.

अशोक नागवाणी,अमरावती.

25 मई 1967 को सुलग उठा था नक्सलबाड़ी

लाल क्रांति के 50 बरस

25मई, 2017 से ठीक 50 बरस पहले देश में लाल क्रांति कहलाने वाले नक्सली आंदोलन का सूत्रपात एक हिंसक घटना के रूप में हुआ था, जिसमें 9 महिला और 2 बच्चों की जान पुलिस कार्रवाई में चली गई थी.

पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग जिले के सिलीगुड़ी सब-डिविजन में नक्सलबाड़ी (नक्सलबारी) नाम का एक छोटा-सा गांव है, जहां से रेलगाड़ियां भी आना-जाना करती हैं. यह गांव अभूतपूर्व भौगोलिक स्थितियों में बसा है. इसके एक तरफ नेपाल, दूसरी तरफ बिहार है. यह जगह इतनी संकीर्ण है कि इस पर कब्जा जमा लेने मात्र से भारत का पूर्वोत्तर हिस्सा शेष भारत से कट सकता है.

कमजोर हुई कांग्रेस

पंडित जाहरलाल नेहरू और बाद के पीएम लाल बहादुर शास्त्री के कार्यकाल के पश्चात देश में कांग्रेस अप्रत्याशित रूप से कमजोर दिखाई दे रही थी. 1967 में लोकसभा और विधानसभाओं के चुनाव एक साथ हुए. लोकसभा में कांग्रेस को जैसे-तैसे बहुमत मिला, जबकि 9 राज्यों में गैरकांग्रेसी सरकारें आ गईं.

बंगाल में बदला

67 के चुनाव के पहले कम्युनिस्ट पार्टी दो धड़ों में विभाजित हो चुकी थी. एक भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (भाकपा)और दूसरी मार्क्सादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा). बंगाल में कांग्रेस ने अन्य दलों के साथ मिलकर यूनाइटेड फ्रंट के नाम से विधानसभा चुनाव के बाद सरकार बनाई. अजोय मुखर्जी 15मार्च, 1967 को सीएम बने और माकपा के ज्योति बसु ने उपमुख्यमंत्री पद की शपथ ली.

चीन और रूस से प्रेरणा

इतिहास बताता है कि देश का कम्युनिस्ट आंदोलन मुख्य रूप से चीन और रूस के कम्युनिज्म से प्रेरित होकर रफ्ता-रफ्ता मजबूत हो रहा था. चारू मजूमदार और कानू सान्याल जैसे जेहादी माकपा के साथ जुड़े हुए थे. आजादी के समय लग रहा था कि देश में जमीन का समान बंटवारा होगा, लेकिन ऐसा हुआ नहीं. अधिकांश जमीनें जमींदारों के पास रह गईं और शोषित मजदूर तबका श्रमहारी ही बना रहा. इसी असंतोष से नक्सलाद के बीज बोए गए.

जमींदारों से जमीन छीनकर श्रमिकों को देने की मांग बढ़ने लगी. आंदोलन चलाने वाले तबके को पश्चिम बंगाल में थोड़ा-बहुत राजाश्रय भी मिला. माओ, लेनिन, कार्ल मार्क्स से प्रेरित होकर यह आंदोलन जोर पकड़ने लगा. आंदोलन के निशाने पर सबसे पहले बंगाल के जमींदार आए.

17 मई की घटना

17मई, 1967 को एक गुट ने नक्सलबाड़ी में जमींदार की खेती पर कब्जे की लड़ाई शुरू की और लाल झंडा गाड़कर जमीन पर मजदूरों का हक जता दिया. पुलिस कार्रवाई के नाम पर जांच शुरू हुई.

पुलिस अफसर की हत्या

हंगामा राजदरबार में भी पहुंचा, लेकिन तत्काल कोई कार्रवाई नहीं हुई और इसके बाद 24मई को पुलिस अधिकारी सोनम बांगड़ो की हत्या कर दी गई. सोनम बांगड़ो की हत्या से राजदरबार और पुलिस महकमे में खलबली मच गई.

पहली खूनी झड़प

सोनम बांगड़ो की हत्या के अगले दिन 25मई को नक्सलबाड़ी (पिनकोड-734-001) में जमींदार विरोधी आंदोलन के रूप में किसान सभा की मीटिंग चल रही थी. यहां बड़ी पुलिस फोर्स पहुंची और संघर्ष के बाद गोलियां चलीं. पुलिस की गोलियों ने 9 महिलाएं और 2 बच्चों की जान ले ली. नक्सलबाड़ी की जमीन पहली बार खून से लाल हो गई. इसी लाल खून के बीज से नक्सलवाद का देश में सूत्रपात हुआ.

बता दें कि इसके बाद चारू मजूमदार नहीं रहे, जबकि उनके साथी कानू सान्याल ने अभी सात साल पहले 23मार्च, 2010 को घर में आत्महत्या कर ली. हालांकि इस समय देश में नक्सलाद को लेकर कई बुद्धिजीवियों पर समर्थन देने के आरोप लग रहे हैं. प्रोफेसर साईंबाबा और किशनजी जैसे नेता पकड़े गए. देश में समय-समय पर जबर्दस्त नक्सली हिंसा की घटनाएं भी हुईं.

25 मई, 2013 को नक्सलियों ने छत्तीसगढ़ में पूर्व सीएम विद्याचरण शुक्ल, महेंद्र कर्मा, पूर्व सांसद गोपाल माध समेत आधा दर्जन से ज्यादा दिग्गज कांग्रेसियों को बम धमाके से उड़ा दिया. पिछले दिनों सुकमा में सीआरपीएफ के 24 जवानों को मार डाला गया. नक्सली गतिविधियों के नाम पर इलाके में ठेकेदारों और कारोबारियों से अवैध वसूली, विकास कार्य में अवरोध पैदा करना, सरकार को काम नहीं करने देने जैसी घटनाएं भी आम हैं.

बदल रहे हालात

नक्सलबाड़ी की घटना से शुरूहुआ हिंसक संघर्ष पश्चिम बंगाल से बिहार, उड़ीसा, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र के विदर्भ, आंध्रप्रदेश जैसे राज्यों में तेजी से फैला. आज की स्थिति में 10 राज्यों के लगभग 35 जिले नक्सलवाद से प्रभावित हैं. इनमें से 10 जिले अति प्रभावित और संवेदनशील श्रेणी में हैं, जहां राज व्यवस्था न के बराबर है.

इन जिलों में छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा और सुकमा, महाराष्ट्र के गढ़चिरोली का समावेश किया जा सकता है. हालांकि इन क्षेत्रों में भी अब भीतर तक सरकारी तंत्र दस्तक दे रहा है. जहां तक बात नक्सलबाड़ी की जाए तो, यह कम्युनिस्टों का गढ़ जरूर है, लेकिन बदलाव की बयार भी देखी जा रही है.

कुछ समय पहले इसी नक्सलबाड़ी में भाजपा के राष्ट्रीय प्रमुख अमित शाह पहुंचे थे और वहां से उन्होंने पश्चिम बंगाल में भाजपा के विकास का अभियान शुरू किया.

लेनिन ने कहा था

एक किताब के अनुसार, कम्युनिज्म में गहरी आस्था रखने वाले रूस के नेता लेनिन ने कहा था, 'जहां-जहां गरीबी और पिछड़ापन रहेगा, वहां-वहां मार्क्सवाद के फूलने-फलने के बड़े अवसर रहेंगे. लेनिन की यह सोच दिखाती है कि नक्सलवादी इसी वजह से अपने प्रभाव वाले इलाकों के विकास में पुरजोर अवरोध डालते रहते हैं.

...तो लड़की भी मेरी

नक्सलबाड़ी में लाल झंडा गाड़कर जमींदार की जमीन अपने नाम करने की घटना की देश में कुछ और जगहों पर उस समय पुनरावृत्ति हुई थी. इसी संदर्भ में एक रोचक घटना भी घटी थी. कम्युनिस्ट नेता की एक लड़की को लाल रिबन लगाकर कांग्रेस नेता के लड़के ने उस पर मालिकाना हक जताते हुए पुलिस से कहा था, 'जब लाल झंडा गाड़कर खेत को अपने नाम किया जा सकता है तो लाल दुपट्टा गले में डालने के बाद यह लड़की मेरी क्यों नहीं? यह समाचार देश के अधिकांश समाचार पत्रों में प्रमुखता से प्रकाशित हुआ था.

मेरे संस्मरण : दयाराम अमलानी
व्यवसायी, अमरावती-नागपुर.

प्रतिदिन

सेवा ही धर्म है

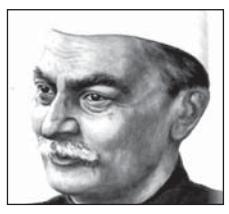

एक बार राजेंद्र प्रसाद ट्रेन के तीसरे दर्जे में बैठे कहीं जा रहे थे. गर्मी का महीना था. गाड़ी में भीड़ बहुत थी. ट्रेन एक स्टेशन पर रुकी. संयोग से उसी समय प्लैटफॉर्म के दूसरी ओर भी एक गाड़ी आकर रुकी. उसमें भी बहुत भीड़ थी. राजेंद्र बाबू ने देखा कि दूसरी ट्रेन के एक डिब्बे में लोग पानी के लिए चिल्ला रहे हैं. चूंकि भीड़ बहुत ज्यादा थी इसलिए वे डिब्बे से नीचे उतर नहीं सकते थे. कोई उन पर ध्यान नहीं दे रहा था. तभी राजेंद्र बाबू की नजर एक महिला पर गई जो अपने छोटे बच्चे को गोद में लिए खिड़की से पानी-पानी चिल्ला रही थी. प्यास से बच्चे रो रहा था. उसकी तरफ भी किसी का ध्यान नहीं जा रहा था. राजेंद्र बाबू से रहा नहीं गया. वह अपने डिब्बे के लोगों को धकियाते हुए किसी तरह नीचे उतरे और दौड़ कर नल से अपने लोटे में पानी भरकर उसे दिया. तब तक उनकी गाड़ी खुल गई. लेकिन दौड कर किसी तरह उन्होंने अपनी ट्रेन पकड़ ली.

राजेन्द्रबाबू की सीट के बगल में बैठे व्यक्ति ने कहा- आप तो दुबले-पतले कमजोर आदमी हैं. इस तरह जोखिम उठा कर आप को ऐसा काम नहीं करना चाहिए. यात्रियों की सुविधा का ध्यान रखना तो सरकार का काम है. राजेंद्र बाबू बोले- भइया, जब हम लोग ही दूसरे की मदद नहीं करेंगे तो सरकार क्या करेगी. उसको क्यों दोष देते हो. वैसे भी प्यासे को पानी पिलाना तो पुण्य का काम है. आप तो हट्टे-कट्टे हो.आपको यह काम सबसे पहले करना चाहिए था. बातचीत में जब उस व्यक्ति को मालूम हुआ कि यह सज्जन कोई और नहीं राजेंद्र बाबू है, तो वह शर्मिंदा हो गया और उसने राजेंद्र बाबू से क्षमा मांगी. राजेंद्र बाबू ने कहा- अरे इसमें क्षमा मांगने की क्या बात है.आज से तुम भी प्रण कर लो कि जरुरतमंद की सेवा का कोई अवसर नहीं छोड़ोगे. सेवा ही सबसे बड़ा धर्म है. उस व्यक्ति ने वैसा ही करने का वचन दिया.

नेटीजन

विविधता का सौंदर्य

वे एक हो रहे हैं, एक राष्ट्र, एक धर्म.. और आप प्रकृति के बहुधर्मी स्वरूप के बखान में लगे हैं?

प्रकृति को श्राप है कि वह एक ही तरह की दो कृति नहीं दे सकती. इस कलंक में भी प्रकृति ने सौंदर्य खोज लिया. जड़, चेतन सबके अनेक वर्ण दे दिए. परिंदे पंख फैलाकर जब आसमान को नापने निकलते हैं, तो समंदर अट्टहास करता है और किनारे आकर किसी शिलाखंड को नहलाकर वापस घूम जाता है. परिंदा पूछता है समंदर से जब तुम्हें मालूम है कि तुम्हारा दायरा तय है, तो बार-बार क्यों दौड़ते हो किनारे की तरफ? समंदर मुस्कराता है, कम्बख्त! तुमने उस पत्थर को कल देखा था, खुरदुरा था. आज देखो, हमने उसे छूकर मखमली बना दिया है. हम यह करते रहेंगे, जानना चाहते हो क्यों? क्योंकि जिसे तुम पाषाण कहते हो, वह समंदर का मिथ्याभिमान है. हमने इच्छावश घेरना चाहा था ब्रह्मांड को, पकड़ना चाहा था चांद को. पूछ लो उन चमकती किरणों से, पूरी कथा बता देंगी. वो तैर रही थी हमारी पीठ पर, लौ लगी थी वहीं से जहां से चली थी. वो पहाड़ नहीं है, समंदर है. उसके सीने में झांककर देखो, समंदर बहता है. छुओ, सूंघो, पीओ, रूप, रस, गंध बह जाओगे प्रकृति की गोद में. अमृत कलश का पान करो, प्रकृति को छू लो...क्या लिखता है रे? कौन सुनेगा तुम्हें? वे एक हो रहे हैं, एक राष्ट्र एक धर्म, एक लिंग, एक रंग, एक गोत्र.. और प्रकृति के बहुधर्मी स्वरूप के बखान में लगे हो? वे प्रकृति तोड़ने वाले लोग हैं.

अपनी फेसबुक वॉल पर चंचल.

आजकल..

और मेजर गोगोई

अधिकांश कश्मीरी युवा, सामान्य नागरिक सुख-चैन से जीना चाहता है. लेकिन पाकिस्तान समर्थक अलगाववादी मीडिया के एक वर्ग की मदद से कश्मीर को आतंकवादी और सेना द्वारा प्रताड़ित बता रहे हैं. सेना झूठी और पत्थरबाज सच्चा ऐसा बुरा वातावरण बनाना न भारत के हित में है और न ही सेना का मनोबल बढ़ाने वाला. इससे अलगाव -वादियों का ही हौसला बढ़ेगा.

कश्मीर की जिहादी लड़ाई अब दिल्ली मीडिया का एक हिस्सा लड़ रहा है, जिसने युक्तिपूर्वक अट्ठारह जवानों या नागरिकों को बचाने वाले मेजर गोगोई के खिलाफ उस पत्थरबाज डार को खड़ा कर दिया है, जिसे जीप के आगे बांधा गया था.

जो सैनिक संविधान और लोकतंत्र की रक्षा के लिए शासकीय कर्तव्य का पालन कर रहा था, उसे झूठा और दुष्ट सिद्ध करने में कुछ ऐसे लेखक-पत्रकार जुट गए हैं, जिनकी हमदर्दी पत्थरबाजों तथा अलगाववादियों के साथ रही है. क्या उन्होंने पत्थर फेंकने वालों से कोई सवाल कभी किया है?

मेजर गोगोई एक बहादुर फौजी अफसर हैं. वह अनुशासित और संवेदनशील हैं. उनका बयान है कि फारूक डार लोगों को सैनिकों के खिलाफ भड़का रहा था.वह शॉल नहीं बुन रहा था. बडगाम में जहां मतदान हो रहा था, वह फारूक अहमद डार के घर से 20 किलोमीटर दूर है. कोई पूछ नहीं रहा कि जहां डार को मत नहीं देना था, वहां वह क्या करने गया था? कोई नहीं बता रहा कि चारों ओर से खून की प्यासी खूंखार भीड़ से घिरे सैनिक उस स्थिति में क्या करते? पत्थरबाजों के सामने गिड़गिड़ाते? डर के मारे हथियार छोड़कर भाग आते और फिर यही पत्रकार उनके मोबाइल पर खींचे वीडियो वायरल करते? या फिर अंतिम उपाय के रूप में उत्तेजित भीड़ पर गोलियां चलाते?

फिर क्या होता? यही कि सेना ने कश्मीरियों पर गोली चलाकर इतने लोगों को मार डाला. मेजर गोगोई ने तुरंत विवेक का सहारा लेकर उन्हीं पत्थरबाजों में से एक को पकड़कर जीप पर बंधा और जवानों तथा नागरिकों की जान बचाई. क्या यही मेजर गोगोई का जुर्म माना जाएगा?

कुपवाड़ा, शोपियां, भद्रवाह, हंदवाड़ा में हर दिन जवान शहीद हो रहे हैं. पाकिस्तान के बर्बर हमलों ने हमारे जवानों के सिर काट लिए हैं. लेकिन जो पत्रकार और जेएनयू छाप वामपंथी छात्र फारूक अहमद डार को सेना की बर्बरता का प्रतीक बनाकर प्रचारित कर रहे हैं, वे पाकिस्तानी तथा इस्लामी जिहादी बर्बरता एवं अमानुषिकता पर एक शब्द भी नहीं बोलते. उनके द्वारा उस मानसिकता का कभी विश्लेषण नहीं किया जाता, जो एक जिहादी को बर्बर और मनुष्यताविरोधी बनाती है.श्रीनगर की बाढ़ में किसने मदद की? कश्मीर में सेना के 40 से ज्यादा प्रथम श्रेणी के सद्भावना विद्यालय चल रहे हैं, जहां 14 हजार से ज्यादा कश्मीरी, प्रायः शत-प्रतिशत मुस्लिम बच्चे-बच्चियां पढ़ रहे हैं. इनमें से दस विद्यालयों में मैं स्वयं गया हूं. शोपियां जैसे आतंकवाद प्रभावित क्षेत्र में भी सद्भावना विद्यालय हैं. इन विद्यालयों का स्तर इतना श्रेष्ठ है कि वहां के नेता अपने बच्चों का दाखिला कराने के लिए सिफारिशें करते हैं. कश्मीर में सेना के अस्पताल, डॉक्टर ग्रामीण कश्मीरियों की निःशुल्क चिकित्सा करते हैं. सेना, पुलिस की भर्ती होती है, तो सौ स्थानों के लिए 50-60 हजार आवेदन आते हैं.

तरुण विजय.

प्रतिदिन अखबार

यह पत्र मालिक, प्रकाशक, सम्पादक नानक आहूजा द्वारा देविका वेब प्रिंटर्स, राजापेठ, अमरावती से मुद्रित कर 'प्रतिदिन अखबार' कार्यालय, देविका परिसर, ब्राह्मण सभा के पीछे, दरोगा प्लॉट, राजापेठ, अमरावती 444 606 से प्रकाशित किया है. फोन-0721-2560155/56/57/58 फैक्स-0721-2677708 E-mail :- pratidinnews@gmail.com
'प्रतिदिन अखबार' में प्रकाशित होनेवाले विभिन्न लेख, पत्र, साहित्य, लेखकों, कवियों आदि के विचारों या तथ्यों पर आधारित होते हैं. इन लेखकों के विचारों अथवा तथ्यों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है. संपादक पर मात्र सम्पादकीय लेखों का ही दायित्व है. संपादक-नानक आहूजा, समाचार संपादक-प्रवीण आहूजा.